an>

Title: Need to include Bhojpuri language in the Eighth Schedule to the Constitution.

योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर) ः विश्व की सबसे बड़ी बोली भोजपुरी लगभग 70 हज़ार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में 16 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। उ.प्र., बिहार, मध्य प्रदेश तथा झारखण्ड में इसका प्रयोग व्यापक है। नेपाल के तराई क्षेत्र, मॉरीशस, फिजी, ट्रिनिडाड, थाईलैण्ड, हॉलैण्ड, मलेशिया तथा सिंगापुर सहित 27 देशों में भी इसका व्यापक आधार है। ऋग्वेद में महर्षि विश्वामित्र द्वारा "भोज" शब्द जिससे भोजपुरी बना, का उल्लेख तो है ही, महाभारत सहित विभिन्न धर्म ग्रंथों से होते हुए मालवा के राजा भोज, उज्जैन के भोज, गुर्जर प्रतिहार भोज, काशी तथा डुमरांव के भोज राजाओं का इतिहास भोजपुरी की व्यापकता, विशालता और प्राचीनता का गवाह है।

संत साहित्यकारों गुरू गोरखनाथ जी, चौरंगीनाथ जी, योगीराज भर्तृहरि, कबीरदास, कमलदास, धरमदास, धरनीदास, पलटूदास, भीखा साहेब जैसे सैंकड़ों सन्त साहित्यकारों, विचारकों और चिन्तकों ने अपनी लोक कथाओं, गीतों, लोकगाथाओं और लोकोक्तियों से भोजपुरी को पीढ़ी दर पीढ़ी एक कंठ से दूसरे कंठ तक पहुंचाया। महापण्डित राहुल सांकृत्यानन, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय और चतुरी चाचा जैसे रचनाकारों ने भोजपुरी गद्य साहित्य को नयी ऊÃ¬चाईयां प्रदान की।

जैसा कि विदित है भारतीय संविधान में मूल रूप में 14 भाषाएंÃ¬ ही आठवीं सूची में थी। बाद में इसमें संशोधन कर सिन्धी, कोंकणी, नेपाली, मैनपुरी, मैथिली, डोगरी, संथाली और बोडो को भी शामिल कर लिया गया। भोजपुरी संस्कृति इन सभी भाषाओं का आदर करते हुए यह जानना चाहती है कि जिस वजह से इन बोलियों को इस सूची में शामिल किया गया उनमें से क्या कोई एक भी तत्व ऐसा है जिसे भोजपुरी पूरी न करती हो। स्वाधीनता आंदोलन में भोजपुरिया क्षेत्र के राजा और रचनाकार सभी अंग्रेजों को भगाने के लिए कृतसंकल्प थे। वीर कुँवर सिंह, शहीद बन्धू सिंह, चित्तू पाण्डेय, मंगल पाण्डेय जहां अपने पराक्रम से, तो फिरंगियाँ, चरखवा, बरोहिया आदि भोजपुरी साहित्यकार अपनी रचनाओं में देशप्रेम की लौ जला रहा थे।

1942 की क्रांति में समूचा भोजपुरी क्षेत्र उद्वेलित था। चौरी-चौरा और बलिया की घटनाओं से अंग्रेज शासक कुपित थे। मगर अब तो हम आज़ाद हैं, हमारी अपनी सरकार है। यद्यपि गृह मंत्रालय ने भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की बात को सैद्धांतिक रूप से स्वीकार भी किया है, फिर भोजपुरी के साथ यह अन्याय क्यों?

हम 16 करोड़ लोगों की भावनाओं को समझते हुए भोजपुरी को तत्काल संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए।